९. गजलें

– डॉ. राहत इंदौरी

कवि परिचय : राहत इंदौरी जी का जन्म १ जनवरी १९५० को इंदौर (मध्य प्रदेश) में हुआ। उर्दू में एम.ए. और पीएच.डी. करने के बाद इंदौर विश्वविद्यालय में सोलह वर्षों तक उर्दू साहित्य का अध्यापन किया। त्रैमासिक पत्रिका 'शाखें' के दस वर्ष तक संपादक रहे। आप उन चंद शायरों में हैं जिनकी गजलों ने मुशायरों को साहित्यिक स्तर और सम्मान प्रदान किया है। आपकी गजलों में आधुनिक प्रतीक और बिंब विद्‌यमान हैं, जो जीवन की वास्तविकता दर्शाते हैं।

प्रमुख कृतियाँ : 'चाँद पागल है', 'रुत', 'मौजूद', 'धूप बहुत है', 'दो कदम और सही' (गजल संग्रह) आदि।

काव्य प्रकार : 'गजल' एक विशेष प्रकार की काव्य विधा है। गजल के प्रारंभिक शेर को 'मतला' और अंतिम शेर को 'मकता' कहते हैं। शेर में आए तुकांत शब्द को 'काफिया' और दोहराए जाने वाले शब्दों को 'रदीफ' कहते हैं। गजल में अधिकांश रूप में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है। गजल की असली कसौटी उसकी प्रभावोत्पादकता है। गजल का हर शेर स्वयंपूर्ण होता है। गुलजार, नीरज, दुष्यंत कुमार, कुँअर बेचैन, राजेश रेड्‌डी, रवींद्रनाथ त्यागी आदि प्रमुख गजलकार हैं।

काव्य परिचय : प्रस्तुत पहली गजल में कवि ने दोस्ती के अर्थ और उसके महत्त्व को दर्शाया है। दूसरी गजल में कवि ने वर्तमान स्थिति का चित्रण किया है। लोग जो होते हैं, दिखाते नहीं हैं और जैसा दिखाते हैं वैसे वे होते नहीं हैं। मनुष्य के इसी दोगलेपन पर गजलकार ने व्यंग्य किया है। प्रस्तुत गजलें नया हौसला निर्माण करने वाली, उत्साह दिलाने वाली, सकारात्मकता तथा संवेदनशीलता को जगाने वाली हैं, जिसमें जिंदगी के अलग-अलग रंगों का खूबसूरत इजहार है।

(अ) दोस्ती

दोस्त है तो मेरा कहा भी मान
मुझसे शिकवा भी कर, बुरा भी मान

दिल को सबसे बड़ा हरीफ समझ
और इस संग को खुदा भी मान

मैं कभी सच भी बोल देता हूँ
गाहे-गाहे मेरा कहा भी मान

याद कर देवताओं के अवतार
हम फकीरों का सिलसिला भी मान

कागजों की खामोशियाँ भी पढ़
इक-इक हर्फ को सदा भी मान

आजमाइश में क्या बिगड़ता है
फर्ज कर और मुझे भला भी मान

मेरी बातों से कुछ सबक भी ले
मेरी बातों का कुछ बुरा भी मान

गम से बचने की सोच कुछ तरकीब
और इस गम को आसरा भी मान

('दो कदम और सही' गजल संग्रह से)

× ×   × ×

(आ) मौजूद

तूफाँ तो इस शहर में अक्सर आता है
देखें, अबके किसका नंबर आता है

यारों के भी दाँत बहुत जहरीले हैं
हमको भी साँपों का मंतर आता है

सूखे बादल होंठों पर कुछ लिखते हैं
आँखों में सैलाब का मंजर आता है

तकरीरों में सबके जौहर खुलते हैं
अंदर जो पलता है, बाहर आता है

बचकर रहना, एक कातिल इस बस्ती में
कागज की पोशाक पहनकर आता है

बोता है वो रोज तअफ्फुन जहनों में
जो कपड़ों पर इत्र लगाकर आता है

रहमत मिलने आती है पर फैलाए
पलकों पर जब कोई पयंबर आता है

सूख चुका हूँ फिर भी मेरे साहिल पर
पानी पीने रोज समंदर आता है

उन आँखों की नींदें गुम हो जाती हैं
जिन आँखों को ख्वाब मयस्सर आता है

('मौजूद' गजल संग्रह से)

०

शब्दार्थ :

हरीफ = शत्रु	**सदा** = आवाज	**तअफ्फुन** = दुर्गंध
संग = पत्थर	**मंजर** = दृश्य	**जहन** = मस्तिष्क
गाहे-गाहे = कभी-कभी	**तकरीर** = बातचीत	**साहिल** = किनारा
हर्फ = अक्षर	**जौहर** = कौशल	**मयस्सर** = प्राप्त

स्वाध्याय

आकलन

(१) लिखिए :

(अ) गजलकार के अनुसार दोस्ती का अर्थ –

....

....

(आ) कवि ने इनसे सावधान किया है –

(१) ....

(२) ....

(३) ....

(इ) प्रकृति से संबंधित शब्द तथा उनके लिए कविता में आए संदर्भ –

शब्द	संदर्भ
(१)	....
(२)	....
(३)	....
(४)	....

काव्य सौंदर्य

२. (अ) गजल में प्रयुक्त विरोधाभासवाली दो पंक्तियाँ ढूँढ़कर उनका अर्थ लिखिए।

(आ) 'कागज की पोशाक' शब्द की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए।

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'जीवन की सर्वोत्तम पूँजी मित्रता है', इसपर अपना मंतव्य लिखिए।

(आ) 'आधुनिक युग में बढ़ती प्रदर्शन प्रवृत्ति' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

रसास्वादन

४. गजल में निहित जीवन के विविध भावों को आत्मसात करते हुए रसास्वादन कीजिए ।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) डॉ. राहत इंदौरी जी की गजलों की विशेषताएँ –

....

....

(आ) अन्य गजलकारों के नाम –

....

अलंकार

यमक – काव्य में एक ही शब्द की आवृत्ति हो तथा प्रत्येक बार उस शब्द का अर्थ भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है ।

उदा. – (१) कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय ।
इहिं खाए बौराय नर, उहि पाए बौराय ।

– बिहारी

(२) तीन बेर खातीं है,
सो तीन बेर खाती हैं ।

– भूषण

श्लेष – जहाँ किसी काव्य में एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलते हों, वहाँ श्लेष अलंकार होता है ।

उदा. – (१) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून ।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून ।।

– रहीम

(२) चिर जीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर ।।

– बिहारी